Language Code : **16**

इस पुस्तिका में **16** मुद्रित पृष्ठ हैं।
This booklet contains **16** Printed pages.

SAS-24-I

प्रश्न-पत्र-I / PAPER-I
संस्कृत भाषा परिशिष्ट
Sanskrit Language Supplement
भाग-IV & V / PART-IV & V

मुख्य परीक्षा पुस्तिका संख्या / Main Test Booklet No.

मुख्य परीक्षा पुस्तिका कोड / Main Test Booklet Code
I

इस परीक्षा पुस्तिका को तब तक न खोलें जब तक कहा न जाए।
Do not open this Test Booklet until you are asked to do so.
इस परीक्षा पुस्तिका के पिछले आवरण (पृष्ठ 15 व 16) पर दिए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
Read carefully the Instructions on the Back Cover (Page 15 & 16) of this Test Booklet.

संस्कृत में निर्देशों के लिए इस पुस्तिका का पृष्ठ 2 देखें। / FOR INSTRUCTIONS IN SANSKRIT SEE PAGE 2 OF THIS BOOKLET.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. यह पुस्तिका मुख्य परीक्षा पुस्तिका की एक परिशिष्ट है, उन परीक्षार्थियों के लिए जो **या** तो भाग IV (भाषा I) **या** भाग V (भाषा II) **संस्कृत** भाषा में देना चाहते हैं, लेकिन **दोनों नहीं**।
2. परीक्षार्थी भाग I एवं भाग II **या** III के उत्तर मुख्य परीक्षा पुस्तिका से दें और भाग IV व V के उत्तर उनके द्वारा चुनी भाषाओं से।
3. अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषा पर प्रश्न मुख्य परीक्षा पुस्तिका में भाग IV व भाग V के अन्तर्गत दिए गए हैं। भाषा परिशिष्टों को आप अलग से माँग सकते हैं।
4. इस पृष्ठ पर विवरण अंकित करने एवं उत्तर पत्र पर निशान लगाने के लिए **केवल काले/नीले बॉल पॉइंट पेन** का प्रयोग करें।
5. इस भाषा पुस्तिका का **संकेत** है **I**। यह सुनिश्चित कर लें कि इस भाषा परिशिष्ट पुस्तिका का संकेत, उत्तर पत्र के **पृष्ठ-2** एवं मुख्य परीक्षा पुस्तिका पर छपे संकेत से मिलता है। अगर यह भिन्न हो, तो परीक्षार्थी दूसरी भाषा परिशिष्ट परीक्षा पुस्तिका लेने के लिए निरीक्षक को तुरन्त अवगत कराएँ।
6. इस परीक्षा पुस्तिका में **दो** भाग IV और V हैं, जिनमें **60** वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जो प्रत्येक 1 अंक का है :
   - भाग-IV : भाषा-I (संस्कृत) (प्र. 91 से प्र. 120)
   - भाग-V : भाषा-II (संस्कृत) (प्र. 121 से प्र. 150)
7. भाग-IV में भाषा-I के लिए 30 प्रश्न और भाग-V में भाषा-II के लिए 30 प्रश्न दिए गए हैं। इस परीक्षा पुस्तिका में केवल संस्कृत भाषा से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं। **यदि भाषा-I और/या भाषा-II में आपके द्वारा चुनी गई भाषा(एँ) संस्कृत के अलावा है तो कृपया उस भाषा वाली परीक्षा पुस्तिका माँग लीजिए। जिन भाषाओं के प्रश्नों के उत्तर आप दे रहे हैं वह आवेदन पत्र में चुनी गई भाषाओं से अवश्य मेल खानी चाहिए।**
8. **परीक्षार्थी भाग-V (भाषा-II) के लिए, भाषा सूची से ऐसी भाषा चुनें जो उनके द्वारा भाषा-I (भाग-IV) में चुनी गई भाषा से भिन्न हो।**
9. रफ कार्य परीक्षा पुस्तिका में इस प्रयोजन के लिए दी गई खाली जगह पर ही करें।
10. सभी उत्तर केवल OMR उत्तर पत्र पर ही अंकित करें। अपने उत्तर ध्यानपूर्वक अंकित करें। उत्तर बदलने हेतु श्वेत रंजक का प्रयोग निषिद्ध है।

INSTRUCTIONS FOR CANDIDATES

1. This booklet is a supplement to the Main Test Booklet for those candidates who wish to answer **EITHER** Part IV (Language I) **OR** Part V (Language II) in **SANSKRIT** language, but **NOT BOTH**.
2. Candidates are required to answer Part I and Part II **OR** III from the Main Test Booklet and Parts IV and V from the languages chosen by them.
3. Questions on English and Hindi languages for Part IV and Part V have been given in the Main Test Booklet. Language Supplements can be asked for separately.
4. Use **Black/Blue Ball Point Pen only** for writing particulars on this page/ marking responses in the Answer Sheet.
5. The CODE for this Language Booklet is **I**. Make sure that the CODE printed on **Side-2** of the Answer Sheet and on your Main Test Booklet is the same as that on this Language Supplement Test Booklet. In case of discrepancy, the candidate should immediately report the matter to the Invigilator for replacement of the Language Supplement Test Booklet.
6. This Test Booklet has **two** Parts, IV and V, consisting of **60** Objective Type Questions, each carrying 1 mark :
   - Part-IV : Language-I (Sanskrit) (Q. 91 to Q. 120)
   - Part-V : Language-II (Sanskrit) (Q. 121 to Q. 150)
7. Part-IV contains 30 questions for Language-I and Part-V contains 30 questions for Language-II. In this Test Booklet, only questions pertaining to Sanskrit language have been given. **In case the language/s you have opted for as Language-I and/or Language-II is a Language other than Sanskrit, please ask for a Test Booklet that contains questions on that language. The language being answered must tally with the languages opted for in your Application Form.**
8. **Candidates are required to attempt questions in Part-V (Language-II) in a language other than the one chosen as Language-I (in Part-IV) from the list of languages.**
9. Rough work should be done only in the space provided in the Test Booklet for the same.
10. The answers are to be recorded on the OMR Answer Sheet only. Mark your responses carefully. No whitener is allowed for changing answers.

परीक्षार्थी का नाम (बड़े अक्षरों में) : ____________________
Name of the Candidate (in Capitals) :

अनुक्रमांक : (अंकों में) / Roll Number : in figures ____________________
: शब्दों में / in words ____________________

परीक्षा केन्द्र (बड़े अक्षरों में) : ____________________
Centre of Examination (in Capitals) :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर : ____________________ निरीक्षक के हस्ताक्षर : ____________________
Candidate's Signature : Invigilator's Signature :

Facsimile Signature Stamp of
Centre Superintendent : ____________________

Language Code : **16**

अस्यां पुस्तिकायां 16 पृष्ठानि सन्ति।

SAS-24-I

प्रश्नपत्रम् I

संस्कृत-भाषा-परिशिष्टम्

भागः IV च V

परीक्षा-पुस्तिका-संकेतकम्

I

यावन्न कथ्येत तावत् इयं परीक्षा-पुस्तिका न अनावरणीया।

अस्याः परीक्षा-पुस्तिकायाः पृष्ठावरणयोः (पृष्ठे 15 एवं 16) प्रदत्ताः निर्देशाः ध्यानपूर्वकं पठनीयाः।

परीक्षार्थिभ्यो निर्देशाः

1. इयं पुस्तिका मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकायाः एकं परिशिष्टम् तेभ्यः परीक्षार्थिभ्यः अस्ति ये IV (भाषा I) भागस्य **अथवा** V (भाषा II) भागस्य परीक्षां **संस्कृत**भाषया दातुमिच्छन्ति, **न** तु **द्वयोः भागयोः**।
2. परीक्षार्थिभिः I, II, III भागानाम् उत्तराणि मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकातः देयानि अपि च IV तथा V भागानाम् उत्तराणि तैः चिताभिः भाषाभिः।
3. आंग्लभाषायां हिन्दीभाषायां च प्रश्नाः मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकायां IV भागे तथा V भागे च प्रदत्ताः। भाषा-परिशिष्टानि भवद्भिः पृथक्तया याचितुं शक्यन्ते।
4. अस्मिन्पृष्ठे च विवरणम् अङ्कयितुम् उत्तरपत्रे च चिह्नं अङ्कयितुं **केवलं नील (Blue/Black)-बाल-पाइन्ट-लेखन्याः** प्रयोगः अनुमतः।
5. अस्याः भाषा-पुस्तिकायाः संकेतकं **I** वर्तते। एतच्च निश्चेतव्यं यदस्याः भाषा-परिशिष्ट-पुस्तिकायाः संकेतकम् उत्तरपत्रस्य **पृष्ठ-2** उपरि प्रकाशितेन संकेतेन साम्यं भजति। एतदपि निश्चेतव्यं यत् मुख्य-परीक्षा-पुस्तिकासंख्या उत्तरपत्रसंख्या च परस्परं साम्यं भजेते। यदि चात्र किमपि अन्तरमस्ति तदा छात्रेण निरीक्षकमहाभागः सम्प्रार्थनीयः यत्स द्वितीयाम् भाषा-परिशिष्ट-परीक्षापुस्तिकाम् ददातु इति।
6. अस्यां परीक्षापुस्तिकायाम् **द्वौ** भागौ स्तः - IV तथा V, एतेषु **60** वस्तुनिष्ठाः प्रश्नाः सन्ति, प्रत्येकं च एकमङ्कं धारयति :
   भागः IV : भाषा I - (संस्कृत) *(प्रश्न संख्या 91 तः 120 पर्यन्तम्)*
   भागः V : भाषा II - (संस्कृत) *(प्रश्न संख्या 121 तः 150 पर्यन्तम्)*
7. **IV** भाषा I भागे 30 प्रश्नाः, V भाषा II भागे च 30 प्रश्नाः सन्ति। अस्यां च परीक्षापुस्तिकायाम् केवलम् संस्कृतभाषया सम्बद्धाः प्रश्नाः सन्ति। **यदि भाषा I उत वा भाषा II इत्येतयोः भवता संस्कृत-अतिरिक्ते भाषे चिते, तदा तद्भाषासम्बद्धा परीक्षापुस्तिका याचनीया। यस्याः अपि भाषायाः प्रश्नानाम् उत्तराणि भवता प्रदीयन्ते, सा भाषा नूनम् आवेदनपत्रे अभीष्टभाषाभिः सह संवदेत्।**
8. **परीक्षार्थिभिः भागः V (भाषा II) कृते, भाषातालिकातः सा भाषा चयनीया या तैः भाषा I (भागे IV) चितायाः अभीष्टभाषातः भिन्ना स्यात्।**
9. रफ़-कार्यं परीक्षापुस्तिकायाम् एतत्प्रयोजनार्थं निर्धारितस्थाने एव कार्यम्।
10. सर्वाणि उत्तराणि OMR उत्तरपुस्तिकायामेव अङ्कनीयानि। सावधानमनसा चैतद् अङ्कनीयम्। उत्तरे परिवर्तनार्थं श्वेत-रञ्जकस्य प्रयोगो निषिद्धः।

परीक्षार्थिनः नाम : ______________________________

अनुक्रमाङ्कः : अङ्केषु : ______________________________

: शब्देषु : ______________________________

परीक्षाकेन्द्रम् : ______________________________

परीक्षार्थिनः हस्ताक्षरम् : ________________ निरीक्षकस्य हस्ताक्षरम् : ________________

Facsimile signature stamp of
Centre Superintendent ______________________________

अभ्यर्थिनः **चतुर्थभागस्य Part-IV** प्रश्नानाम् **(प्र.सं. 91-120)** उत्तरं दद्युः, यदि तैः **संस्कृतं प्रथमभाषा**रूपेण **Language-I** चितम्।

Candidates should attempt the questions from **Part-IV (Q.No. 91-120)**, if they have opted **SANSKRIT** as **Language-I** only.

PART-IV

LANGUAGE-I

SANSKRIT

अभ्यर्थिनः **चतुर्थभागस्य (Part-IV)** प्रश्नानाम् **(प्र.सं. 91-120)** उत्तरं दद्युः, यदि तैः **संस्कृतं प्रथमभाषा**रूपेण **(Language-I)** चितम्।

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 91-99 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत -

यदा कश्चिच्चित्तवृत्तीनवरुध्य समाधिस्थो भूत्वा परमात्मनः साक्षात्करोति, सा समाध्यवस्था योग उच्यते। कठोपनिषदनुसारं यदा पञ्चज्ञानेन्द्रियैः सहितमन्तःकरणस्यांखिलमपि क्रियाकलापमवरुध्यते सा शान्तावस्था 'योगः' इति कथ्यते। श्रीमद्भगवद्गीतायां योगस्य व्यवहारिकं पक्षमुद्घाटयन् प्रतिपादिमस्ति यत्-कर्मसु कौशलं योगो भवति यद्वा जीवनयात्रायाम्मानसिकोद्वेगजनकेष्वाकस्मिकरूपेण उपस्थितेषु सुखदुःखावेगावसादात्मकेषु झञ्झावातेष्वविचलितरूपेण समत्वस्थितिर्योग उच्यते। अनेन प्रकारेण योगस्य उद्देश्यद्वयमस्तः - पारमार्थिको व्यवहारिकश्चेति। यदा मानव इन्द्रियाणि नियम्य आत्मनः परमात्मनश्च साक्षात्करोति तदा स दुःखत्रयाद्विमुच्य पूर्णानन्दावस्थायां वर्तमानो मोक्षं प्राप्नोति। एतत्पारमार्थिकमुद्देश्यमस्ति योगस्य। द्वितीयञ्च व्यवहारिकमुद्देश्यमस्ति - यदा मानवो योगाभ्यासेन जितेन्द्रियत्वमाप्नोति तदा स सुखदुःखादिभिर्द्वन्द्वैरभिहन्यमानोऽपि समावस्थायां वर्तमानः फलाकाङ्क्षाधिकारचिन्तारहितः स्वकर्त्तव्यकर्मसु व्यापृतो भवति।

एवम्प्रकारेण योग आध्यत्मिकमनुशासनमस्ति। योगाभ्यासेन आत्मना सह अन्तःकरणचतुष्टयसहितं शरीरस्य सामञ्जस्यं जायते। योगाभ्यासेन व्यक्तिगतंचेतनायाः सामञ्जस्यं सार्वभौमिकचेतनया सहभवति। एषा सामञ्जस्य अवस्था एव मुक्तिः, मोक्षः, कैवल्यं, निर्वाणमित्यादिभिर्विविधाभिरुपाधिभिर्व्यवह्रियते। समकालीना अनुसन्धातारः प्रमाणयन्ति यद्योगो न केवलं शारीरिकं सौष्ठवमेव सम्पादयति, अपितु विविधानि दुःसाध्यानि शारीरिकमानसिक रोगाणि निराकृत्य, रोगप्रतिरोधकक्षमताश्चर्यजनकरूपेणसंवर्ध्य महदुपकरोति मानवजातेः।

योगशब्दस्य व्युत्पत्तिः - पाणिनीय धातुपाठानुसारं ''युज्'' धातुना सह 'घञ्' प्रत्यये सति 'योगः' शब्दोनिष्पद्यते। ''युज्'' इति धातुस्त्रिष्वर्थेषु विद्यते पाणिनीयधातुपाठे - 1-''युज् समाधौ'', 2-''युजिर्योगे'', 3-युज् संयमनेति च। योगदर्शनसन्दर्भे समाध्यर्थकयुज् धातुना 'योगः' शब्दो निष्पन्नो भविष्यति। अस्मिन् विषये योगदर्शनस्य प्रथमो भाष्यकारो महर्षि व्यासः प्रमाणम्। स योगशब्दस्यार्थः समाधिः करोति। तद्यथा ''योगः समाधिः स च सार्वभौमचित्तस्यधर्मः''। परमधुना मनीषिणो ''युजिर्योगे'', ''युज् संयमने'' इत्येताभ्यां धातुभ्यामपि योगशब्दस्य निष्पत्तिं स्वीकुर्वन्ति।

91. ''योगः'' इत्यस्मिन् शब्दे को धातुःकश्च प्रत्ययः ?

(1) युज् + अण् (2) युच् + घञ् (3) युग् + अञ् (4) युज् + घञ्

92. ''योगः समाधिः स च सार्वभौमचित्तस्य धर्मः'' इति कस्य कथनम् ?

(1) महर्षिदयानन्दस्य (2) महर्षिव्यासस्य (3) महर्षि-अरविन्दस्य (4) महर्षिपतञ्जलेः

93. अधस्तनेषु मोक्षशब्दस्य कश्शब्दः पर्यायवाचको नास्ति ?

(1) निर्वाणम् (2) परमानन्दः (3) कैवल्यम् (4) मुक्तिः

94. मानवो जितेन्द्रियत्वं कथमाप्नोति ?

(1) संयमेन (2) साधनया (3) योगाभ्यासेन (4) प्रत्याहारेण

95. यदा मानव आत्मनः परमात्मनश्च साक्षात्करोति तदा स कस्माद् विमुच्यते।

(1) रोगात् (2) जन्ममरणात् (3) दुःखत्रयात् (4) संसारात्

96. के कथयन्ति यद् योगो दुःसाध्यानि शारीरिकमानसिकरोगाणि निराकरोति ?

(1) चिकित्सकाः
(2) समकालीना अनुसन्धातारः
(3) मनोवैज्ञानिकाः
(4) स्वामिरामदेवस्तस्य समर्थकाश्च

97. ''योग: कर्मसु कौशलम्'' इति कथनं कस्य ग्रन्थस्य ?

(1) गीताया: (2) कठोपनिषद: (3) ईशोपनिषद: (4) योगदर्शनस्य

98. ''दु:साध्यानि शारीरिकमानसिकरोगाणि निराकृत्य'' इत्यत्र ''निराकृत्य'' इत्यस्मिन् पदे को धातु: कश्च प्रत्यय:।

(1) कृ + ल्यप् (2) कृ + तुक् (3) कृ + णिच् (4) कृ + ण्वुल्

99. योगदर्शनस्य प्रथमो भाष्यकार: कोऽस्ति ?

(1) शङ्कराचार्य: (2) यास्क: (3) कात्यायन: (4) महर्षिव्यास:

अधोलिखितान् श्लोकान् पठित्वा 100-105 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत –

स्वे स्वे कर्मण्यभिरत: संसिद्धिं लभते नर:।
स्वकर्मनिरत: सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।।

यत: प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानव:।।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्।।

ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्ध: स्वेन कर्मणा।
कर्तुंनेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्।।

100. कौन्तेय स्वभावजं कर्म केन कारणेन कर्तुं नेच्छति ?

(1) क्रोधात् (2) मोहात् (3) स्वभावात् (4) प्रमादात्

101. श्रेयान्स्वधर्मो......................।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्........।।
अस्मिन् श्लोके प्रयुक्तं ''कर्म'' इति कस्मिंल्लिङ्गे ?

(1) पुंल्लिङ्गे (2) स्त्रीलिङ्गे (3) नपुंसकलिङ्गे (4) पुंल्लिङ्गे नपुंसकलिङ्गे च

102. ईश्वर: सर्वभूतानां..............।
.... यन्त्रारूढानिमायया।।
अस्मिन् श्लोके किं छन्द: ?

(1) आर्या (2) शार्दूलविक्रीडितम् (3) इन्द्रवज्रा (4) अनुष्टुप्

103. ईश्वर: कुत्र वर्तते ?

(1) सर्वभूतानां हृद्देशे (2) सर्वमानवानामेव हृद्देशे
(3) सर्वदेवानामेव हृद्देशे (4) ज्योतिर्लिङ्गेषु

104. मानव: स्वभावनियतं कर्मकुर्वन् किं न प्राप्नोति ?

(1) प्रतिष्ठाम् (2) धनम् (3) मोक्षम् (4) किल्विषम्

105. नर: केन प्रकारेण संसिद्धिं प्राप्नोति ?

(1) तमसेऽभिरत: (2) स्वाध्यायेऽभिरत:
(3) स्वे स्वे कर्मण्यभिरत: (4) स्वे स्वे तपसि अभिरत:

106. निम्नलिखित-वाक्य-सन्दर्भे अधोऽङ्कितेषु किं कथनं नोचितम्?
लय:, गीतम्, गानञ्च एता बालानां प्रवृत्तय:/उपायानि –
(1) शब्दावल्या: समृद्धकरणस्य
(2) शब्दान् वाक्यसंरचनान् च कण्ठस्थीकरणस्य।
(3) उच्चारण-अभ्यासस्य
(4) अभिव्यक्ते संवर्धनस्य वाक्यानां लयस्य च।

107. प्रारम्भिकस्तरे पुस्तकालयस्य प्रयोगविषये अधोऽङ्कितेषु किं सत्यं नास्ति?
पुस्तकालयं केवलं पुस्तकानां संग्रहस्थानमिति न मन्येत, अपितु –
(1) छात्रा: बालसाहित्यस्य विविधाभि: विधाभि: सह अवगता भवेयु:।
(2) पुस्तकै: सह संलग्नस्य सक्रियं वातावरणं भवेत्
(3) अध्यापका: तथा च अन्ये वयस्का: पुस्तकालयेषु पठनव्यवहारस्य आदर्शं स्थापने सक्षमा: भवितुमर्हन्ति।
(4) पुस्तकालये पाठ्यपुस्तकस्य उच्चस्वरेण पठनं सम्भवति।

108. साक्षरताम् अर्जनाय निम्नाङ्कितेषु कस्यां निपुणता स्यात्?
(1) ध्वन्यात्मक-अवधानतायां प्रवाहे च।
(2) दृश्यशब्दालीनां प्रतिमानानाञ्च प्रत्यभिज्ञानम्।
(3) कूटानुवादं [Decoding] भाषा-अवबोधनञ्च।
(4) सटीकता-ध्वन्यात्मकबोधश्च।

109. सम्यकरूपेण व्याकरणशिक्षणस्य कतमा पद्धति: नोचिता?
(1) वास्तविकं सम्प्रेषणं प्रस्तुतिकरणम्।
(2) व्याकरणस्य प्रासङ्गिकानां नियमानां प्रस्तुतिकरणम्।
(3) सम्प्रेषण-अभ्यासस्य अवसरप्रदानम्।
(4) व्याकरणस्य नियमान् कण्ठस्थकरणानन्तरं शिक्षणम्।

110. यो वर्णानां ध्वनीनाञ्च मध्ये सम्बन्धस्थापनायबलं ददाति स: साक्षरताशिक्षण-उपागमोऽस्ति –
(1) समस्त-भाषा-उपागम:
(2) व्याकरण-अनुवाद:
(3) पारिस्थितिक-उपागम:
(4) ध्वनिविज्ञानशिक्षणम्

111. एका कक्षा तृतीयस्य अध्यापिका शिक्षार्थिन: कथयति यत्ते सहपाठिभ्य: कथयेयु:, ''शक्यम्'' [can] इति शब्दस्य प्रयोगं कुर्वाणा: पञ्चप्रश्ना: पृच्छेयु: स्वयोग्यतानुसारं यथा-शक्नोति स तत्र गन्तुम्। एषा प्रक्रिया [गतिविधि:] किमर्थं क्रियते?
(1) मौखिकप्रवाहमयोऽभ्यास:
(2) नियन्त्रितो मौखिकोऽभ्यास:
(3) स्वातन्त्र्येण वदनम्
(4) निष्क्रिय श्रवणम्

112. तृतीयकक्षाया: अध्यापिका स्वकीयायां कक्षायां अध्ययनकोणं स्थापयितुमिच्छति। बालकेभ्य: पुस्तकानां चयनावसरे अधोऽङ्कितेषु कतम: प्रश्न: सर्वाधिके महत्त्वपूर्णोऽस्ति?
(1) किम् एषां पुस्तकानां लेखका: बालसाहित्यस्य लब्धप्रतिष्ठा लेखका: सन्ति?
(2) किं पुस्तकानि कक्षाया: अधिकाधिकछात्राणां स्वतन्त्रपठनस्तरमाकलय्य लिखितानि सन्ति?
(3) किं पुस्तकानि तृतीयकक्षाया: पाठ्यक्रमलक्ष्यं पूर्त्यर्थं समर्थानि?
(4) किम् एतानि पुस्तकानि एकाधिकेनिर्देशात्मके सन्दर्भे उपयोगाय उपयुक्तानि सन्ति?

113. शिक्षार्थिनां वास्तविकजीवनसन्दर्भे भाषाया उपयोगे कतमा पद्धतिः/उपागमः मुख्यं लक्ष्यं अभिलक्षयति?

(1) प्राकृतिक-उपागमः
(2) सम्प्रेषणात्मक-उपागमः
(3) प्रत्यक्ष-विधिः
(4) श्रव्यभाषिक-विधिः

114. एकेन अध्यापकेन शिक्षार्थिनः आदिष्टाः यत्ते परस्परं अभ्यास-पुस्तिकाः परिवर्तयन्तु तथा च सहपाठिनां कार्यं निरीक्षयन्तु। अस्य कार्यस्य किमुद्देश्यम्?

(1) विस्तृतपठनस्य अभ्यासः
(2) नूतनायाः शब्दावल्यायाः अभ्यासः
(3) संरचनानां नियन्त्रितोऽभ्यासः
(4) सहपाठिनः संशोधनकौशलस्य विकासः

115. प्रारम्भिक-अवस्थायां बालाः शिक्षणे अधिकाः संलग्नाः तदा भवन्ति यदा -

(1) ते शिक्षकस्य अनन्तरं कविताः गायन्ति
(2) ते एकाधिकानां ज्ञानेन्द्रियाणां तथा च क्रियात्मकरूपेण हस्तभ्यां प्रयोगं कुर्वन्ति।
(3) ते अभ्यासपुस्तिकासु वारं वारं लिखन्ति यद्वा रेखाङ्कणं कुर्वन्ति।
(4) ते सूक्ष्मगत्यात्मककौशल विकासे एव ध्यानं ददति।

116. पञ्चमकक्षायाः छात्रः कथयति ''अहम् स्वकीयं कार्यं अध्यपकाय प्रदानात्पूर्वं निःशेषेण परिशोधनार्थं अन्तिमरूपेण पश्यामि''। छात्रस्य कतम स्तरोऽस्ति लेखनस्य?

(1) प्रारूपनिर्माणम्
(2) पुनःप्रारूपनिर्माणम्
(3) टंकणशोधनम्
(4) सहयोगिमूल्याङ्कनम्

117. कतम उपागमः/पद्धतिः भाषाकक्षायां बालकान् तेषां स्वाभाविकां भाषां भाषणाय प्रोत्साहयति?

(1) प्राकृतिकः उपागमः
(2) सम्प्रेषणात्मकः उपागमः
(3) प्रत्यक्षविधिः
(4) श्रव्यभाषिकविधिः

118. द्वितीयकक्षायाः छात्रेभ्यः एका अध्यापिका विविधायाः शिक्षण-अधिगम-सामग्रयाः संग्रहम् इच्छति। अधोऽङ्कितेषु शिक्षण-अधिगम-सामग्रयै कतमः निकषः नोचितः?

(1) अस्या अवस्थायाश्छात्रेभ्यश्चयनिता सामग्री सुरक्षिता स्यात्।
(2) चयनिता सामग्री तादृशा स्यात् या छात्रेभ्यः अन्वेषणे, प्रयोगे जिज्ञासायां च प्रभूतानि अवसराणि सम्पादयेत्।
(3) चयनिता सामग्री अधिमानतः स्थानीयरूपेण निर्मिता यद्वा स्थानीयरूपेण प्रापणीया स्यात्, येन सुगमतया प्रतिस्थापनं स्यात्।
(4) चयनिता सामग्री केवलं बालकैर् निर्मिता भवेत् तथा च अश्लक्ष्णयुता स्यात् येन श्लक्ष्णं न स्यात्।

119. राष्ट्रीयपाठ्यचर्यायाः रूपरेखायां निर्देशितान् कौशलान् अधिगन्तुं छात्राणां सहभागिताम् अनुमोदयितुं समावेशी, स्वागतयोग्यम् आनन्ददायकञ्च वातावरणं सृजनाय अधोऽङ्कितेषु सर्वाधिकं किमुपयुक्तम्?

(1) प्रचण्डसूर्यतापसमये बाह्यक्रियाकलापास्थाने आन्तरिकं क्रियाकलापम्।
(2) मुख्यरूपेण छात्राणाम् उत्तमस्वास्थ्यअर्थं कल्याणार्थञ्च योजना निर्माणम्
(3) विकासस्य विविधाभिर् विधाभिर् बालानां कार्यस्य प्रदर्शनम्।
(4) मनोहार्याकर्षकाय परिवेशाय कक्षाकक्षस्य अलङ्करणम्।

120. प्रारम्भिकस्तरे अधोऽङ्कितेषु कतमः पाठ्यपुस्तकस्य योजनायाः सिद्धान्तो नास्ति?

(1) पाठ्यचर्यासिद्धान्तः
(2) प्रस्तुतिकरणसिद्धान्तः
(3) प्रत्यक्षसिद्धान्तः [Concrete Principle]
(4) शिल्पविज्ञानसिद्धान्तः [Technology Principle]

अभ्यर्थिनः **पञ्चमभागस्य Part-V** प्रश्नानाम् **(प्र.सं. 121-150)** उत्तरं दद्युः, यदि तैः **संस्कृतं द्वितीयभाषा Language-II** रूपेण चितम्।

Candidates should attempt the questions from **Part-V (Q.No. 121-150)**, if they have opted **SANSKRIT** as **Language-II** only.

PART–V

LANGUAGE–II

SANSKRIT

अभ्यर्थिन: **पञ्चमभागस्य (Part-V)** प्रश्नानाम् **(प्र.सं. 121-150)** उत्तरं दद्यु:, यदि तै: **संस्कृतं द्वितीयभाषा (Language-II)** रूपेण चितम्।

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 121–128 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत –

योगस्य परम्परा : वेदेषु मूलरूपेण यद्वा सूत्रात्मकरूपेण सर्वा विद्या: सन्ति। योगस्य वर्णनमपि सर्वासु वैदिकसंहितासुमूलरूपेण प्राप्यते। विश्वस्य सर्वे विद्वांस: स्वीकुर्वन्ति यद्वेदा विश्वस्य प्राचीनतमा ग्रन्था: सन्ति। भारतीयज्ञानपरम्परानुसारन्तु सर्गादौ परमकारूणिकेन परमेश्वरेण सर्वोपकारार्थम् अग्नि–वायु:–आदित्य, अङ्गिरा इत्येतेभ्यो ऋषिभ्योऽनुक्रमेण ऋग्वेदस्य, यजुर्वेदस्य, सामवेदस्य, अथर्ववेदस्य च ज्ञानं दत्तम्। इत्थं स्वत: सिद्धं यद् योगपरम्परा अपि सर्गसृजनेन सहैव प्रचलिता आसीत्। प्रस्तूयन्तेऽत्र केचन योगविषयका वेदमन्त्रा: –

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये। (यजुर्वेद:)

अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या। (अथर्ववेद:)

योगविषयका एतादृक्षा बहवो मन्त्रा वेदेषु सन्ति। अत्र तु निदर्शनरूपेण कतिपयानां मन्त्राणामेवोल्लेख: कृत:। वेदेषु विस्तरेण योगसिद्धान्तानां चर्चा विद्यते। अस्मिन् विषये स्वामिदिव्यानन्द सरस्वतिमहोदयेन लिखितो ग्रन्थो द्रष्टव्य:।

वेदानां व्याख्यानभूतेषु ब्राह्मणारण्यकोपनिषत्साहित्येसु अपि विस्तरेण योगस्य चर्चा विद्यते। कठोपनिषदि वर्णनमस्ति – यदा पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि मनसा सह स्वकीयं व्यापारं विहाय स्थिराणि भवन्ति। बुद्धिश्च न विचेष्टते सैव परमशान्त्यवस्था कथ्यते। योगेश्वरेण भगवता कृष्णेन पञ्चसहस्रवर्षेभ्य: पूर्वमेव गीतायां योगपरम्पराया वर्णनं एवम्प्रकारेण विहितमस्ति – आदौ ईश्वरेण योगस्य ज्ञानं विवस्वते दत्तमासीत्। विवस्वान् मनवे योगशास्त्रं प्राह। मनुना इक्ष्वाकोऽध्यापित। एवमुत्तरोत्तरं योगपरम्परा प्रचलिता। अनन्तरं अस्या योगपरम्पराया विलोप:सञ्जात:। तस्यैव योगस्य ज्ञानमधुना मया ते दत्तम्।

महाभारतयुद्धानन्तरमेकवारं पुनर्विलुप्तेव सञ्जाता योगपरम्परा। केवलं कतिपयेषु गिरिकन्दरासु तपस्यारतेषु ऋषिमुनिष्वेन सीमिता सञ्जाता। लोके च योगविषये विविधा भ्रान्ता धारणा: प्रचलिता:। वर्तमानकाले महर्षिणा दयानन्देन पुन महर्षिपतञ्जलेर्योगदर्शनस्य वास्तविकं स्वरूपं प्रकाशितम्। तदनन्तरं महर्षिदयानन्दस्य अनुयायिभिर्भूरिश: प्रचार: कृतो योगपरम्पराया:, तेषु स्वामिरामदेवस्य अपूर्वमेव योगदानं वर्तते।

भारतीय परम्परायामादियोगी शिव इति मन्यते। आदिकाले शिवेन हिमालयस्थे ''कान्ति'' इति नाम सरोवरतीरे सप्तऋषिभ्यो योगस्य ज्ञानं दत्तमासीत्। एतै: सप्तभि: ऋषिभिस्तज्ज्ञानं संसारस्य विविधेषु भूभागेषु प्रचारितम्। शिव: हिमालयक्षेत्रस्याधिपतिरासीत्। शिवस्य राज्ये भागीरथेन गङ्गाया: प्रवाह: प्रवाहित:, यस्य आलङ्कारिकं वर्णनं पुराणेषूपलभ्यते।

2700 ईसात: पूर्ववर्तिषु सिन्धुसभ्यतायां तथा च सरस्वती सभ्यतायां योगासनानां योगमुद्रादीनाञ्चप्राप्यमाणा: साक्ष्या अपि प्रमाणयन्ति यद् भारते सुव्यवस्थिता योगपरम्परा प्रचलिता आसीत्।

महर्षिणा पतञ्जलिना महाभारतयुद्धात्प्रागेव योगदर्शने पञ्चनवत्युत्तरैकशततमेषु सूत्रेषु विभिन्नानां योगसाधकानां योगसाधनाजन्यमनुभवं सङ्कलितमासीत्। योगसूत्राणां प्रथमं भाष्यं महर्षिणा वेदव्यासेन व्यासभाष्यमिति नाम्नालिखितमासीत्।

121. सर्गादौ परमेश्वरेण सामवेदस्य ज्ञानं कस्मै प्रदत्तम्?

(1) आदित्याय (2) अङ्गिरसे (3) ब्रह्मणे (4) वायवे

122. विश्वस्य प्राचीनतमा ग्रन्था: के सन्ति?

(1) अवेस्ता (2) उपनिषद: (3) वेदा: (4) पुराणानि

123. आदौ ईश्वरेण योगस्य ज्ञानं कस्मै दत्तमासीत्?

(1) ईक्ष्वाकवे (2) विवस्वते (3) भास्वते (4) मनवे

124. ''योगविषयका एतादृक्षा बहवो मन्त्राः'' इत्यत्र 'एतादृक्षाः' इत्यस्य उचिता निष्पत्तिरस्ति –

(1) एतद् + दश् + कञ्
(2) एतद् + दृक्ष् + क्विप्
(3) इदम् + दृश् + क्ष
(4) एतद् + दृश् + क्स

125. योगदर्शने कति सूत्राणि सन्ति ?

(1) 195
(2) 194
(3) 185
(4) 205

126. ''वेदव्यासेन व्यासभाष्यमिति नाम्ना लिखितमासीत्'' इत्यत्र ''आसीत्'' इत्यस्मिन् पदे को धातुः कश्य लकारः ?

(1) अस् धातुः लङ् लकारः
(2) आस् धातुः लुङ् लकारः
(3) अस् धातुः लुङ् लकारः
(4) आस् धातुः विधिलिङ् लकारः

127. अधोऽङ्कितेषु सिन्धुसभ्यतायाः कः कालः ?

(1) 2700 ईसापश्चात्
(2) 2700 ईसापूर्वम्
(3) 1700 ईसापूर्वम्
(4) 1700 ईसापश्चात्

128. ''अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या'' इत्यस्य उल्लेखो कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति ?

(1) ऋग्वेदे
(2) अथर्ववेदे
(3) कठोपनिषदि
(4) रामायणे

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा 129-135 प्रश्नानां विकल्पात्मकोत्तरेभ्य उचिततमम् उत्तरं चित्वा लिखत –

विविधा योगपद्धतयः

भारतीय ज्ञानपरम्परायामधो निर्दिष्टाः योगस्य सप्तपद्धतयः सन्ति। तद्यथा – (1) साङ्ख्ययोगः/ज्ञानयोगः (2) कर्मयोगः (3) भक्तियोगः (4) मन्त्रयोगः (5) लययोगः (6) हठयोगः।

एषां समेषां परिचयोऽधोलिखितः –

(1) - साङ्ख्ययोगः/ज्ञानयोगः

साङ्ख्ययोगस्य यद्वा ज्ञानयोगस्य प्रथमो व्याख्याता महर्षि कपिल आसीत्। गीतायां भगवता कृष्णेन प्रतिपादितं यत् ज्ञानेन सदृशं किमपि पवित्रं नास्ति। यदा जीवात्मा साङ्ख्यदर्शने विवेचितानि पञ्चविंशतिः तत्त्वानि यथार्थतया जानाति तदनन्तरं स मुक्तो भवति। एष एव ज्ञानयोगः/साङ्ख्ययोगोऽस्ति। गीतायां ज्ञानयोगस्य व्याख्या इत्थं प्रतिपादिता अस्ति – यथा अग्नि रैधांसि समिद्धः भस्मसात्कुरते तद्वदेव ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते।

(2) – कर्मयोगः

कर्मफलेष्वधिकारं विहाय, आत्मानं निमित्तमात्रमङ्गीकृत्य यदा मानवः कर्मसु प्रवृत्तो भवति तदेव ''कर्मयोगः'' यद्वा ''निष्कामकर्मयोगः'' इति कथ्यते। कर्मफलाधिकारत्यागस्य नास्त्यमभिप्रायो यत्कर्मणः फलन्तु प्राप्स्यत्येव न तत्किमर्थं वयं कर्म कुर्मः ? कारणकार्यसिद्धान्तानुसारं कृतकर्मणः फलन्तु निश्चितमेवास्ति। अस्य अयमेव अभिप्रायो यद्-यदा वयं कृतस्य कर्मणः फलप्राप्त्यर्थमेव कर्मसु प्रवृत्ता भवामस्तदा वयं संशयग्रस्ताः, चिन्तातुराः, भयभीता इत्यादिभ्यो नकारात्मकेभ्यो विचारेभ्यो विचलिता भवामः। कृतस्य कर्मणः फलं प्राप्स्यति न वा ? कदा प्राप्स्यति ? काचिद् बाधा तु नोपस्थिता भविष्यति ? इत्यादिभिः कारणैः कर्मसुन्यूनता भवति। यया शक्त्या, येन चोत्साहेन कर्म करणीयं स्यात्, सा शक्तिः स चोत्साहः फलस्य चिन्तायां नष्टो भवति। परिणामतः कर्मणि न्यूनता जायते। फलं तु कर्मण एव प्राप्स्यते, यदा कर्मणि न्यूनता जाता तदा फलेऽपि न्यूनता भविष्यति। अतः कर्मफलाकांक्षामथवा कर्मफलाधिकारं विहाय अहर्निशं कर्त्तव्यकर्म करणीयमेव कर्मयोगो भवति।

श्रीमद्भगवद्गीतायामस्य व्याख्या अधोलिखिता अस्ति – तव अधिकारः फलेषु नास्ति अपितु कर्मस्वेव तवाधिकारः। त्वं कर्म मा त्यज न च कर्मफलस्य हेतुर्भूः। सफलतायामसफलतायां समो भूत्वा कर्माणि कुरु यतो हि समत्वमेव योगो भवति। अन्यच्च योगस्य परिभाषा अस्ति कुशलतापूर्वकं कर्म अपि योग एव अस्ति। ''योगः कर्मसु कौशलम्''

(3) - भक्तियोगः

मनसावाचाकर्मणा सर्वभावेन आत्मानं परमेश्वरार्पणं कृत्वा अजस्रं कर्त्तव्यकर्मसु निरतमेव भक्तियोगः कथ्यते। भौतिकान् सर्वान् कामान् सर्वथा विहाय श्रद्धान्वितो भूत्वा सर्वकामनीश्वरार्पणं कृत्वा, यस्तस्यैव स्तुतिप्रार्थनोपासनायां समयं यापयति सैव भक्तियोगस्य साधकः।

(4) - मन्त्रयोग:

ईश्वरस्यमुख्यं नाम 'ओउम्' अथवा गायत्र्यादीनां मन्त्राणां जप काले यदा मन्त्रेषु मन स्थिरं भवति सैव ''मन्त्रयोग:'' कथ्यते। वाचिकम्-उपांशु: - मानसिकम् - अजपाजपञ्चेति चतुर्विधा जपविधि:।

(5) - लययोग:

सर्वदा अजस्त्ररूपेण ईश्वरस्य चिन्तने मनने-एव यदा मन:संलग्नम्भवति सैव अवस्था लययोगस्य भवति। ध्यानावस्थायां नादानुसन्धानं कृत्वा मनो नादे-एव स्थिरीकरणमपि लययोग: कथ्यते।

(6) - हठयोग:

हठ शब्दे हकारो ठकारश्चेत्येतौ शब्दौ योगपरम्परायां पारिभाषिकौ स्त:। हकारस्य अर्थोऽस्ति सूर्यस्वर: [नासिकाया दक्षिणरन्ध्रेण चलन्तौ श्वासप्रश्वासौ] ठकारस्य अर्थोऽस्ति चन्द्रस्वर: [नासिकाया वामरन्ध्रेण चलन्तौ श्वासप्रश्वासौ] सूर्यचन्द्रस्वरयो: सम्मेलनं कृत्वा सुषम्णानाड्यां प्रवाहकरणमेव हकारठकारयोर्योगो ''हठयोग'' इति कथ्यते।

129. अधोऽङ्कितासु का योगस्य पद्धतिर्नास्ति ?

(1) भावातीतयोग: (2) राजयोग: (3) कर्मयोग: (4) लययोग:

130. साङ्ख्ययोगस्य प्रथमो व्याख्याता कोऽस्ति ?

(1) पतञ्जलि: (2) हिरण्यगर्भ: (3) कपिल: (4) व्यास:

131. पञ्चविंशति: तत्त्वानामुल्लेख कुत्र अस्ति ?

(1) योगदर्शने (2) साङ्ख्यदर्शने (3) गीतायाम् (4) ईशोपनिषदि

132. अधस्तनेषु को जपविधिर्नास्ति ?

(1) उपांशुविधि: (2) वचिकविधि: (3) प्रांशुविधि: (4) अजपाजपविधि:

133. ''फलन्तु प्राप्स्यत्येव न तत् किमर्थं वयं कर्म कुर्म:'' इत्यत्र 'वयम्' इत्यस्य निष्पत्तिर् भवति -

(1) इदम् पुंल्लिङ्गे प्रथमाविभक्तौ बहुवचने (2) अदस् पुंल्लिङ्गे प्रथमाविभक्तौ बहुवचने

(3) अस्मद् स्त्रीलिङ्गे प्रथमाविभक्तौ बहुवचने (4) युस्मद् पुंल्लिङ्गे प्रथमाविभक्तौ बहुवचने

134. 'हठयोग:' इत्यत्र 'ठ' [ठकार:] इत्यस्य कोऽर्थ: ?

(1) नासिकायादक्षिणरन्ध्रस्यश्वासप्रश्वासौ (2) नक्षत्रस्वर:

(3) चन्द्रस्वर: (4) सूर्यस्वर:

135. ''तत्किमर्थं वयं कर्म कुर्म:'' इत्यत्र 'कुर्म:' इत्यस्य निष्पत्तिर्भवति -

(1) डुकृञ् + लट्लकारे उत्तमपुरुषस्य बहुवचने

(2) डुकृञ् + लट्लकारे प्रथमपुरुषस्य बहुवचने

(3) डुक्रीञ् + लट्लकारे उत्तमपुरुषस्य बहुवचने

(4) डुक्रीञ् + लट्लकारे प्रथमपुरुषस्य बहुवचने

136. प्रारम्भिकावस्थायाम् आकलनस्य उपकरणानाम् प्रक्रियाणाम् अभिकल्पना च इत्थं प्रकारेण भवेत् -

(1) येन शिक्षार्थिभ्य: परीक्षण पत्राणि परीक्षा: च यथोचिता: सुस्पष्टा: च भवेत्।

(2) येन शिक्षार्थिनां अधिगम-अनुभवस्य स्वाभाविको विस्तारो भवेत्।

(3) शिक्षार्थिनां प्रगते: [प्रगति इत्यस्य], छात्रस्य समग्रकक्षाप्रदर्शनसन्दर्भे वर्णनं विश्लेषणञ्च भवेत्।

(4) अध्यापका: सर्वेषां छात्राणां उपलब्धिमाकलनाय एकस्या: पद्धतेरूपयोग: कर्तुं शक्नुवन्ति।

137. बालानां संज्ञानात्मकं विकासं भाषा च –

(1) उद्दीपन–प्रतिक्रियाया सम्बन्धितेन सिद्धान्तेन तथा च अनुकरणस्य प्रक्रियया सम्बन्धितोऽस्ति

(2) मानवस्य तत् सहजातमुपकरणमस्ति येन स भाषायां नैपुण्यमधि गच्छति।

(3) विकासे नास्ति कोऽपि सम्बन्धः।

(4) येषु समुदायेषु बालाः निवसन्ति तेषां संस्कृत्या समुदायेभ्यश्च गहनरूपेण सम्बन्धिताः।

138. कश्चित् केन प्रकारेण सर्वोत्तमतया द्वितीयां भाषाम् अधिगन्तुं समर्थः ?

(1) तादृश्यां कक्षायां यत्र भवान् व्याकरणे ध्यानं ददाति अध्यापकस्य सहयोगं च प्राप्नोति।

(2) स्वसमाजे सहजातवाचकैः सह सततसम्पर्केण।

(3) श्रव्य–भाषिक प्रक्रियायाः अनुसारं सवादानां आवृत्तिः अभ्यासेन च।

(4) लक्ष्य भाषायाः वाचनपाठ्यक्रमे प्रवेशमाध्यमेन।

139. भाषायाः अधिगमप्रक्रिया अतिगहना या आजन्मादामृत्योः चलति।
अनेन कथनेन भवान् सहमतो न वा ?

(1) अहमनेन कथनेन सहमतोऽस्मि।

(2) अहमनेन कथनेन असहमतोऽस्मि।

(3) अहमनेन कथनेन आंशिकरूपेण सहमतोऽस्मि।

(4) अहमनेन कथनेन आंशिकरूपेण असहमतोऽस्मि।

140. कक्षायां बालशिक्षार्थिभ्यः मुद्रितपुस्तकैः सह श्रव्यपुस्तकानि तथा च स्पर्शग्राहीज्ञानजनकानि पुस्तकानि स्युः। यतोहि –

(1) अनेन कक्षायां विविधता जायते बालाः च विविधतायै स्पृहयन्ति।

(2) अनेन आकलनाय अध्यापकानां विविधानां पुस्तकानां प्रयोगाय स्वायत्तता भवति।

(3) विविधतायुतेभ्यश्छात्रेभ्यः तादृशाणि पुस्तकानि सुलभानि भवति।

(4) तादृशाणि पुस्तकानि अध्यापकेषु भाराधिक्यं न भवन्ति।

141. एकेन अध्यापकेन पञ्चमकक्षायाः छात्रेभ्यः सत्वरेण कथा एका पठनाय अनन्तरं च चत्वारि चित्राणि क्रमेण योजनाय कथितम्। अस्याःगतिविधेः किमुद्देश्यमस्ति ?

(1) चित्राणां पत्राणाञ्च क्रमेण योजनम्।

(2) सारांशरूपेण पठनाय अभ्यासकरणम्।

(3) विशिष्टाः सूचनाः ज्ञातुम् पठनाभ्यासकरणम्।

(4) कथायां प्रयुक्तानां नूतनानां कठिनानाञ्च शब्दानां पुनरावृत्तिः।

142. एवंविधपठनस्य कतिपयानि अधिगम–उद्देश्यम् कार्याणि च सन्ति। शिक्षार्थिनः अपेक्षन्ते यत्ते विषयवस्तुं विस्तरेण दत्तावधानेन च पठेयुः। एतदस्ति –

(1) विस्तृतं पठनम् (2) गहनं पठनम्

(3) निर्देशितं पठनम् (4) आनन्दाय पठनम्

143. अध्यापकेन दत्तानि आदर्शवाक्यानि पुनः उच्चार्य छात्राः भाषायाः प्रतिमानं/आदर्शरूपं शिक्षन्ति। ते वाक्यान् कण्ठस्थान् कुर्वन्ति। उचितरूपेण च अभ्यासे कृति सति, अध्यापकस्तान् प्रोत्साह्ययति। अनेन प्रकारेण अध्यापक किं करोति?

(1) श्रव्यभाषिक विधिः (2) सम्प्रेषणात्मक-उपागमः
(3) समग्रभौतिकप्रक्रिया (4) संरचनात्मक-उपागमः

144. शिक्षार्थिनः व्याकरणनियमान् शब्दावलीं च रटन्ति, प्रायेण कार्यं मातृभाषायां भवति। भाषायाः अधयापकः कक्षायां कां विधिम् अनुसरेत?

(1) प्रत्यक्षविधिः (2) प्राकृतिक-उपागमः
(3) सम्प्रेषणात्मकं शिक्षणम् (4) व्याकरण-अनुवादः

145. यदि स्वपरिवेशे बालाः भाषाद्वयमुच्चार्यमाणं श्रृण्वन्ति। भाषाद्वयं श्रवणस्य अवसरोऽयम् -

(1) बालानां कृते हानिकारकः (2) बालानां कृते लाभदायकः
(3) कोऽपि प्रभावो न भवति (4) अवबोधने संभ्रमो जायते

146. पठनधिगमे मुख्या बाधा अस्ति-प्रेरणा तथा च उत्तमबालसाहित्यस्योपलब्धिः। बाधामेतां दूरीकरणाय -

(1) अध्यापकाः गृहकार्यार्थं प्रतिदिनं पुस्तकमेकं पठनाय तान् प्रेरयन्तु।
(2) अभिभावकान् प्रोत्साहनं कुर्युः यत्ते स्वगृहेषु लघुपुस्तकालयमेकं स्थापयेयुः।
(3) बालसाहित्यस्य अनायासेन उपलब्धता भवेत् येन पठनाय रुचिः प्रोत्साहनञ्च जायेत।
(4) विद्यालयस्य संरक्षकाः छात्रान् पुस्तकमेलकेसु नयेयुः। येन ते पुस्तकानां पठने प्रोत्साहिता स्युः तथा च तेषां रुचिः भवेत्।

147. प्रारम्भिकस्तरे भाषायाः कौशलम् आकलनाय भाषाया अध्यापकः कुत्र ध्यानं दद्यात्?

(1) वर्णमालाया अक्षराणां परिज्ञानाय (2) विरामादिचिह्नानां प्रयोगे
(3) समुचितरूपेण पठने (4) अवबोधपूर्वकं पठने

148. एका सम्यक् भाषण-(वदन्) गतिविधिः सा अस्ति, यस्मिन् -

(1) अध्यापकः सम्यग्रूपेण व्याख्या करोति।
(2) शिक्षार्थिनः अधिकं शृण्वन्ति।
(3) शिक्षार्थिनः अधिकं आलपन्ति।
(4) प्रामुख्येन वार्तालापप्रियाणां छात्राणां मुख्यं योगदानं भवति।

149. पाठस्य प्रारम्भे अध्यापकेन छात्राः समूहेषु विभक्ताः, कथितञ्च समाचारपत्रे पठितं रूचिकरम् आलेखमधिकृत्य विचारविनिमयं कुर्वन्तु। विचारविनिमयस्य [परस्परवार्तालापस्य] एषा प्रक्रिया किमर्थमस्ति?

(1) मौखिकप्रवाहाभ्यासः। (2) नियन्त्रितो मौखिकाभ्यासः।
(3) निर्देशितो मौखिकाभ्यासः। (4) सक्रियं श्रवणम्।

150. समग्रभाषा उपागमः किमस्ति?

(1) अर्थाधारितम्। (2) कौशलाधारितम्।
(3) ध्वनिनाम्मिश्रणम्। (4) ध्वनिनां सङ्केतसम्बन्धे निष्कर्षज्ञापनम्।

- o O o -

SPACE FOR ROUGH WORK

अवधानपूर्वकम् एते निर्देशाः मनसि धारणीया :

1. विभिन्नप्रश्नानाम् उत्तरं कथं प्रदेयमिति प्रश्नपत्रे व्याख्यातम् अस्ति। प्रश्नानाम् उत्तरलेखनात् पूर्वं तत् अवश्यं पठनीयम्।

2. प्रत्येकं प्रश्नार्थं चत्वारि वैकल्पिकोत्तराणि निर्दिष्टानि, तेषु समुचितोत्तरप्रदानार्थं OMR उत्तरपुस्तिकायाः **पृष्ठे-2** केवलम् एकमेव वृत्तं पूर्णरूपेण **नील (Blue/Black)**-बाल-पाइन्ट-लेखन्या प्रपूरणीयम्। एकवारम् उत्तरांकनादनन्तरं न तत्परिवर्तयितुं शक्यते।

3. परीक्षार्थिभिः उत्तरपत्रं नैव तिर्यक्करणीयम्, न च कथंकारमपि तद् अन्यथाप्रकारेण अङ्कनीयम्। परीक्षार्थी स्वीयानुक्रमाङ्कं उत्तरपत्रे निर्धारितस्थानातिरिक्तम् अन्यत्र कुत्रापि न लिखेत्।

4. परीक्षापुस्तिकायाः उत्तरपत्रकस्य च प्रयोगः सावधानं करणीयः। कस्यामपि परिस्थितौ (केवलं तां परिस्थितिं विहाय यदा परीक्षापुस्तिकायाः उत्तरपत्रस्य च सङ्केतके सङ्ख्यायां वा भिन्नता दृश्यते) द्वितीय-परीक्षापुस्तिका नोपलभ्या एव।

5. परीक्षापुस्तिकायाम् उत्तरपत्रे च प्रदत्त-सङ्केतक-सङ्ख्या परीक्षार्थिभिः उपस्थितिपत्रके सम्यक्रीत्या अवश्यमेव लेखनीया।

6. ओ.एम.आर. (OMR) उत्तरपत्रिकायां कूटस्थ (Coded) सूचनानां पठनं यन्त्रद्वारा भविष्यति। अतः कापि सूचना असम्पूर्णा न स्यात्। तथैव प्रवेशपत्रस्यसूचनातः भिन्ना सूचना न प्रदेया।

7. प्रवेशपत्रं विहाय अन्य-मुद्रित-लिखित-पाठ्यसामग्री कर्गदचिटिकां 'पेजरम्' इति चलदूरभाषां, विद्युत्-उपकरणानि अथवा कामपि अन्यसामग्रीं परीक्षाभवनं कक्षं वा नेतुम् अनुमतिः न अस्ति।

8. परीक्षा गृहे/प्रकोष्ठे मोबाइलयन्त्रं वेतारसूचनायन्त्रं (स्वीच अफ कृत्वा अपि) अन्यानि च प्रतिबन्धितवस्तूनि नैव आनेतव्यानि। एतस्य नियमस्य उल्लङ्घनम् अनुचितमार्गावलम्बनम् इति विधास्यते यस्त कृते दण्डस्य विधानम् अस्ति। परीक्षातः निष्कासनम् अपि भवितुम् अर्हति।

9. निरीक्षणसमये परीक्षार्थिभिः प्रवेशपत्रं निरीक्षकाय अवश्यं दर्शनीयम्।

10. केन्द्र-अधीक्षकस्य निरीक्षकस्य वा अनुमतिं विना परीक्षार्थिभिः स्थानं न परित्यक्तव्यम्।

11. कार्यरतनिरीक्षकाय उत्तरपत्रं दत्त्वा उपस्थितिपत्रके च हस्ताक्षरं पुनः कृत्वा एव परीक्षार्थिभिः परीक्षाभवनं कक्षं वा परित्यक्तव्यम् न अन्यथा। यदि केनापि परीक्षार्थिना उपस्थितिपत्रिकायां पुनः हस्ताक्षरं न क्रियते तर्हि 'परीक्षार्थिना उत्तरपत्रकं न दत्तम्' इति अभिप्रायः। इदम् अनुचितसाधनानां प्रयोगस्य रूपम् इति मन्तव्यम्।

12. वैद्युत-हस्तचालित-परिकलकस्य उपयोगः सर्वथा वर्जितः।

13. परीक्षाभवने कक्षे वा अनुकूलाचरणाय परीक्षार्थिनः सङ्घटनस्य सर्वैः नियमैः विनियमैः वा नियमिताः। अनुचितसाधनानाम् उपयोगेन सम्बद्धाः निर्णयाः सङ्घटनस्य नियम-विनियम-अनुवर्तनीयाः एव।

14. कस्यामपि परिस्थितौ परीक्षापुस्तिकायाः उत्तरपत्रकस्य वा कोऽपि भागः पृथक् न करणीयः।

15. **परीक्षासम्पन्नानन्तरं परीक्षार्थिनः परीक्षाभवन-परित्यजनात् पूर्वं उत्तरपत्रं कक्षनिरीक्षकाय अवश्यमेव प्रदास्यन्ति। परीक्षार्थिनः इमाम् प्रश्नपुस्तिकां नेतुम् अनुमताः।**

निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें :

1. जिस प्रकार से विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए जाने हैं उसका वर्णन परीक्षा पुस्तिका में किया गया है, जिसे आप प्रश्नों का उत्तर देने से पहले ध्यान से पढ़ लें।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर के लिए OMR उत्तर पत्र के **पृष्ठ-2** पर केवल एक वृत्त को ही पूरी तरह **नीले/काले बॉल पॉइन्ट पेन** से भरें। एक बार उत्तर अंकित करने के बाद उसे बदला नहीं जा सकता है।
3. परीक्षार्थी सुनिश्चित करें कि इस उत्तर पत्र को मोड़ा न जाए एवं उस पर कोई अन्य निशान न लगाएँ। परीक्षार्थी अपना अनुक्रमांक उत्तर-पत्र में निर्धारित स्थान के अतिरिक्त अन्यत्र न लिखें।
4. परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर पत्र का ध्यानपूर्वक प्रयोग करें, क्योंकि किसी भी परिस्थिति में (केवल परीक्षा पुस्तिका एवं उत्तर पत्र के कोड या संख्या में भिन्नता की स्थिति को छोड़कर) दूसरी परीक्षा पुस्तिका उपलब्ध नहीं करायी जाएगी।
5. परीक्षा पुस्तिका/उत्तर पत्र में दिए गए परीक्षा पुस्तिका कोड व संख्या को परीक्षार्थी सही तरीके से उपस्थिति-पत्र में लिखें।
6. OMR उत्तर पत्र में कोडित जानकारी को एक मशीन पढ़ेगी। इसलिए कोई भी सूचना अधूरी न छोड़ें और यह प्रवेश-पत्र में दी गई सूचना से भिन्न नहीं होनी चाहिए।
7. परीक्षार्थी द्वारा परीक्षा हॉल/कक्ष में प्रवेश-पत्र के सिवाय किसी प्रकार की पाठ्य-सामग्री, मुद्रित या हस्तलिखित, कागज़ की पर्चियाँ, पेजर, मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या किसी अन्य प्रकार की सामग्री को ले जाने या उपयोग करने की अनुमति नहीं है।
8. मोबाइल फोन, बेतार संचार युक्तियाँ (स्विच ऑफ अवस्था में भी) और अन्य प्रतिबंधित वस्तुएँ परीक्षा हॉल/कक्ष में नहीं लाई जानी चाहिए। इस सूचना का पालन न होने पर इसे परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग माना जाएगा और परीक्षार्थी विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी, परीक्षा रद्द करने सहित।
9. पूछे जाने पर प्रत्येक परीक्षार्थी, निरीक्षक को अपना प्रवेश-पत्र दिखाएँ।
10. केन्द्र अधीक्षक या निरीक्षक की विशेष अनुमति के बिना कोई परीक्षार्थी अपना स्थान न छोड़ें।
11. कार्यरत निरीक्षक को अपना उत्तर पत्र दिए बिना एवं उपस्थिति-पत्र पर दुबारा हस्ताक्षर किए बिना परीक्षार्थी परीक्षा हॉल/कक्ष नहीं छोड़ेंगे। यदि किसी परीक्षार्थी ने दूसरी बार उपस्थिति-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए, तो यह माना जाएगा कि उसने उत्तर पत्र नहीं लौटाया है और यह अनुचित साधन का मामला माना जाएगा। **परीक्षार्थी अपने बाएँ हाथ के अंगूठे का निशान उपस्थिति-पत्र में दिए गए स्थान पर अवश्य लगाएँ।**
12. इलेक्ट्रॉनिक/हस्तचालित परिकलक का उपयोग वर्जित है।
13. परीक्षा हॉल/कक्ष में आचरण के लिए परीक्षार्थी परीक्षण संस्था के सभी नियमों एवं विनियमों द्वारा नियमित हैं। अनुचित साधनों के सभी मामलों का फैसला परीक्षण संस्था के नियमों एवं विनियमों के अनुसार होगा।
14. किसी भी परिस्थिति में परीक्षा पुस्तिका और उत्तर पत्र का कोई भाग अलग न करें।
15. **परीक्षा सम्पन्न होने पर, परीक्षार्थी हॉल/कक्ष छोड़ने से पूर्व उत्तर पत्र निरीक्षक को अवश्य सौंप दें।** ***परीक्षार्थी अपने साथ इस परीक्षा पुस्तिका को ले जा सकते हैं।***

READ THE FOLLOWING INSTRUCTIONS CAREFULLY :

1. The manner in which the different questions are to be answered has been explained in the Test Booklet which you should read carefully before actually answering the questions.
2. Out of the four alternatives for each question, only one circle for the correct answer is to be darkened completely with **Blue / Black Ball Point Pen** on **Side-2** of the OMR Answer Sheet. The answer once marked is not liable to be changed.
3. The candidates should ensure that the Answer Sheet is not folded. Do not make any stray marks on the Answer Sheet. Do not write your Roll No. anywhere else except in the specified space in the Answer Sheet.
4. Handle the Test Booklet and Answer Sheet with care, as under no circumstances (except for discrepancy in Test Booklet Code or Number and Answer Sheet Code or Number), another set will be provided.
5. The candidates will write the correct Test Booklet Code and Number as given in the Test Booklet/Answer Sheet in the Attendance Sheet.
6. A machine will read the coded information in the OMR Answer Sheet. Hence, no information should be left incomplete and it should not be different from the information given in the Admit Card.
7. Candidates are not allowed to carry any textual material, printed or written, bits of papers, pager, mobile phone, electronic device or any other material except the Admit Card inside the examination hall/room.
8. Mobile phones, wireless communication devices (even in switched off mode) and the other banned items should not be brought in the examination halls/rooms. Failing to comply with this instruction, it will be considered as using unfair means in the examination and action will be taken against the candidate including cancellation of examination.
9. Each candidate must show on demand his/her Admit Card to the Invigilator.
10. No candidate, without special permission of the Centre Superintendent or Invigilator, should leave his/her seat.
11. The candidates should not leave the Examination Hall/Room without handing over their Answer Sheet to the Invigilator on duty and sign the Attendance Sheet twice. Cases where candidate has not signed the Attendance Sheet second time will be deemed not to have handed over the Answer Sheet and dealt with as an unfair means case. **The candidates are also required to put their left hand THUMB impression in the space provided in the Attendance Sheet.**
12. Use of Electronic/Manual Calculator is prohibited.
13. The candidates are governed by all Rules and Regulations of the Examining Body with regard to their conduct in the Examination Hall/Room. All cases of unfair means will be dealt with as per Rules and Regulations of the Examining Body.
14. No part of the Test Booklet and Answer Sheet shall be detached under any circumstances.
15. **On completion of the test, the candidate must hand over the Answer Sheet to the Invigilator in the Hall / Room.** ***The candidates are allowed to take away this Test Booklet with them.***